वैशेषिक दर्शन का सामान्य परिचय

⇒ वैशेषिक दर्शन भारतीय आस्तिक दर्शनों में आता है, क्योंकि यह अन्य आस्तिक दर्शनों की तरह वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करता है।

⇒ न्याय और वैशेषिक दोनों दर्शन 'समानतंत्र' कहलाते हैं, क्योंकि इनके अधिकतर विचारधाराएँ एक जैसी है। दोनों को एक संयुक्त नाम 'न्याय-वैशेषिकदर्शन' से भी पुकारा जाता है।

⇒ संस्थापक → महर्षि कणाद।
मूल नाम → उलूक।

⇒ महर्षि कणाद के विषय में कहा जाता है कि वे अन्न-कणों को खेत से चुनकर अपने जीवन का निर्वाह किया करते थे इसलिए उनका नाम कणाद पड़ा। इनका वास्तविक नाम उलूक था इसी कारण वैशेषिक दर्शन को 'औलूक्य' दर्शन की भी संज्ञा दी जाती है।

⇒ दूसरा इसका नाम वैशेषिक इसलिए पड़ा क्योंकि इसमें 'विशेष' नामक पदार्थ की व्याख्या की गई है।

⇒ वैशेषिक दर्शन का विकास 600 ई० पू० हुआ माना जाता है।

⇒ ग्रंथ → 'वैशेषिकसूत्र' (कणाद द्वारा रचित)।
(2). 'पदार्थ-धर्म-संग्रह' (प्रशस्तपाद ने वैशेषिकसूत्र पर भाष्य लिखा है)
(3). उदयनाचार्य → 'किरणावली' (4). श्रीधराचार्य → 'न्याय-कंदली'।

⇒ वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की मीमांसा (व्याख्या) की गई है।

⇒ सिद्धान्त → ईश्वर, सृष्टिवाद, मोक्ष, बंधन, तत्वशास्त्र, दो प्रमाण- (प्रत्यक्ष और अनुमान), परमाणुवाद, पदार्थ विवेचन, कर्म, आदि।

→ सात (7) पदार्थ → द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

→ नौ (9) द्रव्य → आत्मा, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, जल, पृथ्वी, मन।

सात पदार्थ (श्रेणियाँ)

वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की विशद मीमांसा (व्याख्या) हुयी है। पदार्थ शब्द दो शब्दों के योग से मिलकर बना है - पद + अर्थ। 'पदार्थ' का अर्थ है - जिसका नामकरण हो सके। अर्थात् वह वस्तु जिसका 'पद' (शब्द) से बोध होता है। अतः जितनी भी वस्तुएँ हैं या जिनका नामकरण संभव है, वे सभी पदार्थ हैं। पदार्थ के अन्दर वैशेषिक ने विश्व की वास्तविक वस्तुओं की चर्चा की है।

वैशेषिक दर्शन में कुल सात पदार्थों की व्याख्या हुयी है। वे हैं - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव। यथा -

धर्मविशेष प्रसूता द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेषसमवायानां।
पदार्थानां साधर्म्य वैधर्म्याभ्यां तत्वज्ञानान्निःश्रेयसम्॥
(वैशेषिक सूत्र 1/4)

वैशेषिक सूत्र में महर्षि कणाद ने पदार्थों के विभाग क्रम में उपर्युक्त सूत्र द्वारा छः भाव पदार्थों का वर्णन किया है। इन्हीं छः भाव पदार्थों के साधर्म्य-वैधर्म्य के द्वारा तत्वज्ञान की प्राप्ति से मोक्ष की सिद्धि को बतलाया है। महर्षि कणाद ने इस सूत्र में छः ही पदार्थों का उल्लेख किया है। अभाव रूप सप्तम पदार्थ अभावस्वरूप होने के कारण उसका निरूपण भाव पदार्थों के पश्चात् किया है। इस प्रकार से वैशेषिक दर्शन में भाव-अभाव के रूप में सात (7) पदार्थ स्वीकृत किए गये हैं।

पदार्थ विभाजन → पदार्थों का विभाजन दो रूपों में हुआ है -

(i) भाव पदार्थ - (6) - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय।

(ii) अभाव पदार्थ - यह अभाव पदार्थ के अन्तर्गत रखा गया है।